भगवान महावीर 2550वीं निर्वाण उत्सव समिति के महावीर जयंती कार्यक्रम पर माननीय अध्यक्ष का सम्बोधन

आज आचार्य श्री सुनील सागर जी के पावन सान्निध्य में महावीर जयंती के इस भव्य उत्सव में सम्मिलित होकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। सर्वप्रथम महावीर स्वामी के चरणों में शत-शत नमन। आचार्य श्री सुनील सागर जी एवं अन्य संतों की भी चरण वंदना करता हूँ। मेरी कामना है कि आप सभी के जीवन में सुख, सफलता और शांति हो तथा भगवान महावीर स्वामी की कृपा आप पर बनी रहे।

भगवान महावीर स्वामी के उदय से भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व के अंदर एक नए युग की शुरुआत हुई थी। जिस समय पूरे विश्व में अशान्ति, युद्ध, संघर्ष का वातावरण था, उस समय में उन्होंने विश्व को शांति, अहिंसा, आध्यात्मिकता, धर्म के जीवन मूल्य प्रदान किए थे और उनके जीवन के ढाई हजार वर्षों के बाद आज भी उनकी शिक्षा, उनके आदर्श और उनके सिद्धांत उतने ही प्रासंगिक हैं।

चाहे पर्यावरण का विषय हो, सामाजिक अस्थिरता का विषय हो, मानवता का विषय हो, प्रत्येक विषय पर महावीर स्वामी ने जो कहा और अपने जीवन में उन्होंने जिन सिद्धांतों का पालन किया, वे आज भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं।

यही कारण है कि आज महावीर जयंती का उत्सव केवल जैनियों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह एक वैश्विक त्योहार है। इसे पूरे भारत और दुनिया भर में भव्यता और आध्यात्मिक उत्साह के साथ मनाया जाता है।

भारत सदैव अध्यात्म, शांति और मानवता के प्रति प्रेम की भूमि रही है। आध्यात्मिकता हमेशा हमारे देश में जीवन शैली रही है। हमारे प्राचीन ग्रंथ जैसे वेद, पुराण, उपनिषद, पूरे विश्व के लिए ज्ञान, धर्म और उत्तम विचारों के भंडार हैं। हमारी संस्कृति 'वसुधैव कुटुम्बकम' की रही है। हमने सदैव संपूर्ण विश्व को एक परिवार माना है, यह भावना हमारे मानस और संस्कृति में शामिल है।

हमें अपने देश पर गर्व है कि भारत की पवित्र भूमि से दुनिया के महान धर्मों, जैन, बौद्ध, हिंदू और सिख धर्म की उत्पत्ति हुई। हमारे देश में हजारों वर्षों से सभी धर्मों के लोग आपसी सद्भाव और शांति से रहते हैं। हमारी बहुलतावादी संस्कृति पूरे विश्व के लिए एक आश्चर्य है।

यही विविधता हमारी ताकत और शक्ति है। पूर्व से पश्चिम तक, उत्तर से दक्षिण तक, यह भारत को एक साथ बांधती है, जिससे ''एक भारत - श्रेष्ठ भारत'' बनता है।

भारत ने हमेशा पूरे विश्व को, मानवता को, शांति और अहिंसा का मार्ग दिखाया है। भारत ने पूरी दुनिया को सदैव प्रेम, सद्भाव, शांति, अहिंसा, बंधुत्व और आपसी एकता का शाश्वत संदेश दिया है। ये वो संदेश हैं, जिनकी प्रेरणा विश्व को भारत से मिलती है। आज जब पूरे विश्व में युद्ध और अशान्ति का वातावरण है, तो उचित मार्गदर्शन के लिए दुनिया आज एक बार फिर भारत की ओर देख रही है।

भारत का इतिहास आप देखें तो आप महसूस करेंगे, जब भी मानवता को आंतरिक प्रकाश की जरूरत हुई है, भारत की ही संत परंपरा से कोई न कोई सूर्य उदित हुआ है। कोई न कोई महापुरूष, संत और मनीषी हर कालखंड में हमारे देश में रहे हैं, जिन्होंने समाज को सही दिशा दी है।

भगवान महावीर ने तो समस्त मानवता को एक नया संदेश दिया, नया मार्ग दिखाया। यह भगवान महावीर स्वामी की शिक्षा, उनके बताए मार्ग की ही शक्ति है कि जैन धर्म के मानने वाले आज भारत में ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व में अपनी सेवा और समर्पण के भाव के लिए जाने जाते हैं।

भगवान महावीर जैन धर्म की परंपरा के अनुसार 24वें तीर्थंकर थे। राजकुल में जन्म लेने के बावजूद वे अध्यात्म की ओर आकर्षित थे। बारह वर्षों की कठिन तपस्या एवं निरंतर साधना के बाद उन्हें कैवल्य ज्ञान की प्राप्ति हुई, जिसके बाद वे महावीर बने। महावीर अर्थात उन्होंने अपने सभी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर ली थी।

भगवान महावीर अहिंसा को सबसे उच्च नैतिक गुण मानते थे। उन्होंने न सिर्फ लोगों को मानवता का पाठ पढ़ाया बल्कि सभी जीवों पर दया करना**,** एक–दूसरे से प्रेम करना**,** परोपकार करना भी सिखाया।

महावीर स्वामी की 5 मूल शिक्षाओं को हम पंच-प्रतिज्ञा या महाव्रत कहते हैं। सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य आदि पाँच सिद्धांत हमें त्याग, संयम, प्रेम और करुणा जैसे मानवीय मूल्यों का पाठ पढ़ाते हैं। यही वे गुण हैं जो हमें अनुशासित होना सिखाते हैं, हमें जीवन का वास्तविक अर्थ सिखाते हैं।

भगवान महावीर की स्पष्ट दृष्टि थी, स्पष्ट विजन था कि एक आदर्श समाज की स्थापना तभी हो सकती है, जब मनुष्य के अंदर त्याग, संयम, प्रेम और करुणा जैसे मानवीय गुणों का निवास हो।

उनकी शिक्षाओं ने पूरी मानवता को करुणा, दया और प्रेम का जीवन जीने की प्रेरणा दी है। उनकी शिक्षाओं पर चलकर ही हम एक शांतिपूर्ण, न्यायपूर्ण और सद्भावना पूर्ण समाज का निर्माण कर सकते हैं।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जैन धर्म ने वास्तव में, मानवता को अहिंसा और तपस्या की अवधारणा दी है। दैनिक जीवन में अहिंसा का अभ्यास किस प्रकार किया जा सकता है, इसका सूक्ष्मतम विवरण इसमें दिया गया है। भगवान महावीर स्वामी की शिक्षा के पालन से निस्संदेह हम एक बेहतर मनुष्य बन सकते हैं।

जैन समुदाय की प्रवृत्ति ऐसी रही है कि वे जहां भी जाते हैं उस समाज को, पूरे समुदाय को अपना लेते हैं। उसके बाद चाहे शिक्षा हो, मेडिकल हो, उद्योग हो, आर्थिक क्षेत्र हो, स्टार्ट अप हो, हर क्षेत्र में सामुदायिक सेवा के लिए वे सबसे आगे होते हैं। यह इसीलिए संभव हो पाता है कि समाज के गरीबों, दलितों और उपेक्षित वर्गों के उत्थान के प्रति आपकी प्रतिबद्धता आपके संस्कार में समाहित है। इसके लिए आपको दुनिया भर में सराहा जाता है।

हमारा सौभाग्य है कि हमें आचार्य सुनील सागर जी जैसे संतश्री का सत्संग मिला है। आचार्यश्री की महिमा इतनी बड़ी है कि उसका वर्णन करना अत्यंत कठिन कार्य है। वे महान संत हैं, महर्षि हैं, उनके नेतृत्व में जैन धर्म ने नई ऊंचाईयां प्राप्त की हैं।

आचार्यश्री बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। उनकी लेखनी जहाँ संस्कृत, प्राकृत के छन्दों का निर्माण करने में अद्‌भुत है, वहीं हिन्दी की सरल कविताओं को लिखने में भी सिद्धहस्त है। साहित्य की अलग अलग विधाओं में आचार्यश्री ने विविध विषयों पर सरल सुबोध एवं सुगम भाषा में लिखा है। मेरा सौभाग्य है कि मुझे उनका स्नेह और आशीर्वाद सदैव प्राप्त होता रहा है।

अंत में आज महावीर जयंती के इस पावन अवसर पर मैं अपने जैन भाइयों के साथ-साथ सभी देशवासियों को पुनः हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ, बधाई देता हूँ।

आइए, आज हम संकल्प लें कि भगवान महावीर स्वामी ने जिस उत्कृष्ट राष्ट्र और उत्कृष्ट समाज के निर्माण के लिए शिक्षा दी थी, हम अपने दैनिक जीवन में उन शिक्षाओं का अनुसरण करें, उनके जीवन से प्रेरणा लें। हम उनके महान विचारों और प्रथाओं को आगे बढ़ाने का संकल्प लें और सभी के कल्याण के लिए एक सामंजस्यपूर्ण और प्रगतिशील समाज का निर्माण करें। भगवान महावीर की शिक्षाओं की सच्ची अनुपालना तभी हो पायेगी, जब हमारा हर प्रयास समाज के कमजोर वर्गों के कल्याण के लिए होगा।

आप सबको पुनः भगवान महावीर जयंती की शुभकामनाएं। भगवान आपका कल्याण करें।